आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 09 मई, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

कोरोना से स्वंय को सुरक्षित रखने के लिए टीकाकरण जरूरी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनो। राम–राम सा।

सम्पूर्ण विश्व के साथ–साथ हमारा देश भी कोरोना महामारी की दूसरी लहर से संघर्ष कर रहा है। इस बीमारी को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक महामारी घोषित किया है। कोरोना महामारी ने विश्व की आर्थिक व्यवस्था को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है। कोराना वायरस एक ऐसा संक्रमण है, जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत तेजी से फैलता है। यह वायरस व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता के आधार पर अलग–अलग तरीके से प्रभाव डालता है। कुछ रोगियों में कोराना के सामान्य लक्षण ही नजर आते है परन्तु कुछ रोगियों में बीमारी के गम्भीर लक्षण दिखाई देते है। अतः इस बीमारी से दूसरों को संक्रमित होने से बचाने के लिए कोरोना के सामान्य लक्षण दिखाई देने पर तुरन्त अपने आप को आइसोलेट कर लेवें व चिकित्सक से सम्पर्क कर आवश्यक टेस्ट करवाकर उपचार शुरू कर देना चाहिए। इस रोग से संक्रमित होने से बचने के लिए मास्क का प्रयोग, भीड़–भाड़ वाले स्थानों में जाने से बचे, सोशल डिस्टेन्सिंग बनाये रखें, नाक व मुंह को न छुए, हाथों को बार–बार साबुन से धोएं व सेनिटाइजर का प्रयोग करते रहें साथ ही जहां तक सम्भव हो घर पर ही रहें अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें। इस बीमारी से बचाव हेतु टीकाकरण ही एक उपाय है। भारत ने भी विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू कर दिया है। हमारे लिए गर्व की बात यह है कि हमारे देश ने कोरोना के टीके स्वंय ने ही विकसित किये है। इस महा–अभियान के अन्तर्गत स्वंय का टीकाकरण करवायें तथा अपने आस–पास के पडौसियों एवं रिश्तेदारों को भी इस टीकाकरण हेतु जागरूक करें। कोरोना से स्वंय को सुरक्षित रखने के लिए वैक्सीनेशन करवाना बहुत जरूरी है। कोविड़–19 का टीका बिल्कुल सुरक्षित टीका है। इसलिए वैक्सीनेशन करायें, स्वंय बचे और अपनों को भी बचायें। कोरोना से पूर्ण सुरक्षा के लिए टीकाकरण के बाद भी सावधानी बरतनी जरूरी है। सफाई, दवाई और कड़ाई से हम कोरोना की लड़ाई अवश्य जीतेगें। स्वंय जागरूक होकर ग्रामीण बुजुर्गो और महिलाओं को कोरोना से बचाव की जानकारी के साथ टीकाकरण करवाने के लिए संवेदन एवं प्रेरित भी करें, साथ ही सरकार के द्वारा जारी एडवाइजरी का पालन करना चाहिए। सावधानी में ही सुरक्षा हैं। सतर्क रहें। घर पर रहें, सुरक्षित रहें। धन्यवाद।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

माननीय राज्यपाल द्वारा देशी गौवंश आधुनिक दुग्धशाला का उद्घाटन

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

राज्यपाल ने राजभवन में राजुवास द्वारा निर्मित देशी गौवंश आधुनिक दुग्धशाला का किया उद्घाटन

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने 14 अप्रेल को राजभवन, जयपुर, में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा निर्मित देशी गौवंश आधुनिक दुग्धशाला का उद्घाटन किया। राज्यपाल श्री मिश्र को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ) कर्नल विष्णु शर्मा ने बताया कि आधुनिक दुग्धशाला में गौवंश के लिए चारे, आराम, साफ सफाई और स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित व्यवस्था की गई है। तेज गर्मी से बचाव के लिए यहां फव्वारा प्रणाली, गौवंश की स्वच्छता के लिए स्विंगिंग गाय ब्रश, स्वचालित स्नान के उपकरण आदि लगाए गए हैं। इससे पहले राज्यपाल श्री मिश्र ने आधुनिक दुग्धशाला का अवलोकन कर वहां गौवंश की देखभाल के लिए विकसित की गई अत्याधुनिक सुविधाओं और उपकरणों की कार्य प्रणाली को समझा। उन्होंने देशी गौवंश आधुनिक दुग्धशाला में की गई व्यवस्थाओं को संतोषप्रद बताते हुए सराहना की। उन्होंने इस दौरान गायों को हरा चारा और गुड़ खिलाकर दुलार किया। राज्यपाल श्री मिश्र ने विश्वविद्यालय के त्रैमासिक न्यूज लेटर का विमोचन भी किया। इस अवसर पर राज्यपाल महोदय के सचिव श्री सुबीर कुमार, प्रमुख विशेषाधिकारी श्री गोविन्दराम जायसवाल, पशुचिकित्सा महाविद्यालय जयपुर की डीन प्रो. संजीता शर्मा, राजुवास बीकानेर के लाइजन अधिकारी प्रो. जी.एस. गौतम एवं असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. नवाब सिंह सहित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री तोमर द्वारा विश्वविद्यालय के वर्चुअल क्लासरूम व एग्री दीक्षा वेब एजूकेशन चैनल का लोकार्पण

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण, ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने 16 अप्रेल को ऑनलाइन समारोह में वेटरनरी विश्वविद्यालय के वर्चुअल क्लासरूम एवं एग्री दीक्षा वेब एजूकेशन चैनल का लोकार्पण किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा व इण्डियन एग्रीकल्चर स्टेटिक्स रिसर्च इंस्टीट्यूट की केन्द्रीयकृत परियोजना के अन्तर्गत देश के श्रेष्ठ 18 विश्वविद्यालयों में वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर को भी शामिल किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने बताया कि सूचना एवं संचार की आधुनिकतम तकनीक पर आधारित इस वर्चुअल क्लॉस रूम के माध्यम से वीडियो लैक्चर ऑनलाइन लिए जा सकेगे एवं उनका अखिल भारतीय स्तर पर वेबकास्ट किया जा सकेगा। इससे पूरे भारत वर्ष के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि 70 विद्यार्थियों की क्षमता वाले इस ए.सी. वर्चुअल क्लास रूम को सभी आवश्यक उपकरणों से सुसज्जित किया गया है।

विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 24 अप्रेल को विश्व पशुचिकित्सा दिवस–2021 एलेम्बिक फार्मास्युटिकल के संयुक्त तत्वावधान में "कोविड–19 की विपदा परिस्थितियों में पशु एवं मानव स्वास्थ्य हेतु पशुचिकित्सकों की भूमिका" विषय पर वेबिनार के रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने सम्बोधन करते हुए कहा की वेटरनरी पाठ्यक्रम में विविधताओ का समावेश है। वेटरनेरियन पूरे डिग्री के दौरान विभिन्न विषयों का अध्ययन एवं ज्ञान अर्जन करता हैं अतः पशुचिकित्सा के विभिन्न आयामों जैसे इथ्नोमेडिसिन, हर्बल मेडिसिन, खाद्य उत्पादों की वेल्यु चैन, खाद्य सुरक्षा, आर्गनिक पशु उत्पाद, संक्रामक बिमारियों की रोकथाम आदि क्षैत्रों में नवाचार करके समाज में योगदान दे सकते है। राजुवास के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने पशुपालन क्षैत्र में अपार अवसर एवं भविष्य की संभावनाओं विषय पर अपना विस्तृत व्याख्यान दिया। डॉ. उमेश शर्मा, अध्यक्ष भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् ने मुख्य अतिथिः के रूप में अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति की तरह राष्ट्रीय पशु स्वास्थ्य नीति बनाने का सुझाव दिया। प्रो. संजीता शर्मा, अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर. ने अपने सम्बोधन में कहा कि पशुचिकित्सा के अलावा हमें खाद्य सुरक्षा की तरफ भी ध्यान देने की आवश्यकता है। वेबिनार में डॉ. खुशाल सिंह सोलंकी ने आर.टी.–पी.सी.आर. के माध्यम से कोविड–19 को पता लगाने की विस्तृत जानकारी दी। डॉ. सुरेश कुमार झीरवाल ने श्वान पालको एवं पशुचिकित्सको को कोविड–19 से बचाव हेतु विभिन्न सुझाव दिये। वेबिनार के आरम्भ में प्रो. आर. के. सिंह, अधिष्ठाता वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर ने स्वागत किया। प्रो. आर.के. जोशी अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर) ने धन्यवाद दिया। वेबिनार का आयोजन प्रो. धर्म सिंह मीणा ने किया।

राज्य स्तरीय ई-पशुपालक चौपाल

मरूस्थल का जहाज ऊँट है औषधीय गुणों का भण्डार

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्यस्तरीय ई– पशुपालक चौपाल 28 अप्रेल को आयोजित की गई। मरूस्थल का जहाज 'ऊँट' औषधि के भंडार की ओर विषय पर राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के निदेशक डॉ. आर्तबन्धु साहू ने विशेषज्ञ रूप से ऊँट पालकों से संवाद किया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने पशुपालक चौपाल में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ऊँट राजस्थान की कला–संस्कृति, पोषण एवं पशुपालकों की आजीविका का महत्वपूर्ण अंग है। आवागमन के अन्य साधनों के प्रचलन से ऊँटों का उपयोग धीरे–धीरे कम हो रहा है। ऊँट के उत्पादों का वैज्ञानिक विश्लेषण एवं मूल्यांकन करके समाज में इसकी विशेष पहचान बनाई जा सकती है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि ऊँट अपनी शारीरिकी एवं कार्यिकी विशेषताओं के कारण राजस्थान का विशेष पशु है एवं पशुपालकों की आजीविका का महत्वपूर्ण स्तोत है अतः ऊँटों की उपयोगिता के विभिन्न आयामों पर ध्यान देकर पशुपालकों के मध्य इसकी आवश्यकता को पहचान दिलाने की आज जरूरत है। आमन्त्रित विशेषज्ञ डॉ. साहू ने विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि ऊँट राजस्थान, गुजरात एवं हरियाणा राज्यों में उपलब्ध है जिसमें से 80 प्रतिशत से ज्यादा ऊँट केवल राजस्थान में है। परिवहन में इनकी उपयोगिता घटने के कारण इनकी संख्या में गिरावट आई है। विभिन्न वैज्ञानिक शोधों से ज्ञात हुआ कि ऊंटनी के दूध में सोडियम, पोटेशियम, कैल्शियम, जिंक एवं विटामिन 'ए' की मात्रा अधिक पाई जाती है जोकि शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, स्ट्रेस या थकान कम करने में सहायक है। ऊँटनी के दूध में पाया जाने वाले विशेष पेपटाईड रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा को कम करता है। शुगर या डाईबिटिक रोगियों के लिए ऊँटनी का दूध औषधि के रूप में कारगर साबित हुआ है। इसमें वसा की मात्रा गाय, भैस व भेड से भी कम होती है जो कि पाचन क्षमता बढ़ाने में सहायक है। ऊँटनी के दूध को आमतौर पर चाय, दही या छेणा बनाने में काम नहीं लेते है लेकिन इसके दूध को हल्का गर्म या पार्श्वुकृत करके आईसक्रिम या फ्लेवर्ड मिल्क के रूप में काम ले सकते है। ऊँट का ना केवल परिवहन अपितु स्पोर्ट्स, रेस, पर्यटन, औषधीय दूध, गोबर खाद, ऊष्ट्र सीरम आधारित दवाईयां आदि विशेष पहलुओं पर ध्यान देकर बहुआयामी उपयोगिता पर ध्यान देना होगा। इससे ऊँट पालकों की आय में वृद्धि होगी एवं इसकी घटती संख्या को भी रोका जा सकता है। ई–पशुपालक चौपाल में राज्यभर के पशुपालक किसान विश्वविद्यालय के अधिकारिक फेसबुक पेज से जुडे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलटी

कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान ग्राम गाढ़वाला

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत ग्राम गाढवाला में 29 अप्रेल को ग्राम पंचायत के सहयोग से कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि कोरोना से बचाव के लिए वैक्सीनेशन बहुत जरूरी है और इसके लिए ग्रामीणों को आवश्यक जानकारी वैक्सीनेशन की आवश्यक जानकारी पैम्पलेट के माध्यम से उपलब्ध कराई गई। ग्राम गाढवाला में विश्वविद्यालय द्वारा तीन प्रकार के पैम्पलेट "कोरोना वायरस संक्रमण का खतरा घटाएं यह सरल उपाय अपनाएं", "खुद बचें, अपनो को बचाएं" और "कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान" घर–घर वितरित कर ग्रामीणों को कोरोना से बचाव के जानकारी के साथ ग्रामीणों को कोरोना टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित किया गया। डॉ मनोहर सेन की देखरेख में इस अभियान के तहत कोरोना वैक्सीनेशन के लिए आवश्यक जानकारी ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को प्रदान की गई। ग्रामीणों को मास्क भी वितरित किये गये। अभियान में सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल का सहयोग रहा।

कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान ग्राम जयमलसर

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा ग्राम जयमलसर में 30 अप्रेल को ग्राम पंचायत के सहयोग से कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने शिक्षकों, विद्यार्थियों और ग्रामीणों से आव्हान किया की कोरोना से खुद को सुरक्षित रखने के लिए वैक्सीनेशन करवाना बहुत जरूरी है और कोविड–19 का टीका बिल्कुल सुरक्षित टीका है, इसलिए वैक्सीनेशन कराए, खुद बचें और अपनों को भी बचाएं। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया की डॉ अमित कुमार की देखरेख में कोरोना से बचाव के जानकारी के साथ कोरोना टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित किया गया। अभियान में डॉ सौरव दड़िया, मदन सिंह, कृपाल दान सहयोगी रहे। ग्रामीणों को मास्क भी वितरित किये गये।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 1, 9, 17, 23 एवं 28 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 121 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 7, 20 एवं 23 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 16, 20 एवं 23 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 63 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया –लाड़नू द्वारा 5, 8, 19, 22 एवं 26 अप्रेल को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 99 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 1, 5, 9, 15, 20, 24 एवं 28 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 5, 8, 16, 22, 26 एवं 30 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 7, 9, 15, 17, 20, 22 एवं 24 अप्रेल को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 169 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6, 9, 16, 20, 24 एवं 26 अप्रेल को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 145 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 12, 19, 22 एवं 24 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6, 8, 17, 20, 23 एवं 27 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 7, 9, 16, 21 एवं 24 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 101 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 12, 15 एवं 22 अप्रेल को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 69 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 9, 16, 20 एवं 23 अप्रेल को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 24 अप्रेल को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 23 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन

विश्वविद्यालय के विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों द्वारा ऑनलाइन माध्यम से भी विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन किया गया तथा पशुपालकों को कोविड–19 के दिशा–निर्देशो की पालना एवं पशुओ से विभिन्न जुनोटिक बिमारियों के बारे में जानकारी दी।

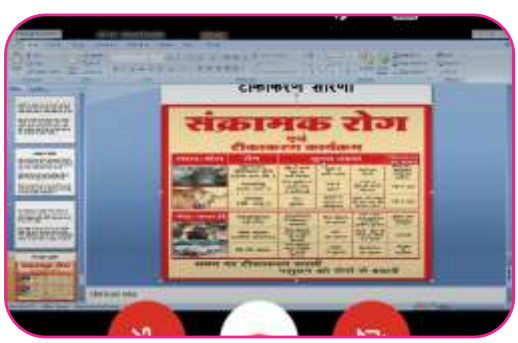

दूधारू पशुओं में रेबीज रोग

रेबीज एक विषाणुजनित रोग है। यह रोग श्वानों, बिल्ली, बंदर, गीदड़, लोमड़ी या नेवले के काटने से स्वस्थ पशु के शरीर में प्रवेश करते हैं और नाडियों के द्वारा मस्तिष्क में पहुंच कर उसमें बीमारी के लक्षण पैदा करते हैं। रोगग्रस्त पशु की लार में यह विषाणु ज्यादा होता है। रोगी पशु द्वारा दूसरे पशु को काट लेने से अथवा शरीर में पहले से मौजूद किसी घाव के ऊपर रोगी पशु की लार लग जाने से यह बीमारी फैल जाती है। दुधारू पशु के जरिए यह रोग मानव स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। यह रोग जितना मनुष्यों के लिए घातक होता है ऊतना ही दुधारू पशु (गाय, भैंस, बकरी) के लिए भी होता है। अक्सर पशु जब चरने के लिए जाते है तो श्वान उन्हें अपना शिकार बना लेते है और पशुपालकों को जानकारी न होने के कारण वह इसे समझ नही पाते है और पशु की मृत्यु हो जाती है।

पशुओं में रेबीज के लक्षणः

- ❖ पशु जोर–जोर से रम्भाने लगता है।
- ❖ पशु झुंड से दूर रहने जगता है।
- ❖ पशु को निगलने में कठिनाई होने लगती है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसके मुंह में कुछ अटका हुआ है पशु पानी पीने से भी डरने लगता है।
- ❖ पशु का स्वभाव अचानक बदल जाता है। वह काफी सतर्क रहने लगता है और जरा सी आवाज होने पर वह आक्रामक हो जाता है।
- ❖ मुंह से अत्यधिक लार गिरने लगती है।
- ❖ पशु अपने सिर को किसी पेड़ अथवा दीवार पर मारता रहता है।
- ❖ पशु अपने शरीर का संतुलन बनाये रखने में असमर्थ हो जाता है।
- ❖ रोगग्रस्त पशु दुबला होने लगता है।
- ❖ सही समय पर उपचार न मिलने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है।
- ❖ पशुओं में रेबीज दो रूपों में देखा जाता है। पहला जिसमें रोगग्रस्त पशु काफी भयानक हो जाता है जिसमें पशु में रोग के सभी लक्षण स्पष्ट दिखाई देते है। दूसरा जिसमें वह बिल्कुल शांत रहता है इनमें रोग के लक्षण बहुत कम अथवा नही के बराबर दिखाई देते है।

पशु को संक्रमित होने पर क्या करें:

- ❖ जहां पर श्वान ने काटा है उस जगह को साबुन पानी से अच्छी तरह से धोएं क्योंकि साबुन में कार्बोलिक एसिड़ पाया जाता है, जो रेबीज के विषाणु को नष्ट कर देता है।
- ❖ पशु को पशुचिकित्सालय में तुरंत उपचार के लिए ले जावें।
- ❖ कई बार पशुपालक पशु के मुंह में क्या अटक रहा है, यह देखने के लिए मुंह में हाथ डाल देते है यह एक बहुत आम गलती है और वह व्यक्ति रेबीज से संक्रमित हो जाता है।
- ❖ संक्रमित पशु को अन्य पशुओं से अलग बांधें और उसका खाना–पीना भी अलग कर दें।

रेबीज की समस्या सिर्फ पशुओं तक ही सीमित नहीं, संक्रमित पशु का अपाश्चरीकृत दूध पीने से मनुष्यों के स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है। अतः संक्रमित पशु के दूध का पाश्चरीकरण के बाद ही उपयोग करें। यह बीमारी एक पशु से दूसरे पशु में फैलती है जिससे पशुपालक को आर्थिक हानि भी होती है। बीमारी के लक्षण पैदा होने के बाद इसका कोई ईलाज नही होता है। पशुपालक अपने पशुओं का इस रोग से बचाव एंटी रेबीज का टीकाकरण करवाकर कर सकते है। यह टीका साल में एक बार लगवाना चाहिए, ताकि कोई जानवर अगर दुधारू पशु को काट भी ले तो वो मरने से बच सकता है।

डॉ. तरूणप्रीत
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

मई–जून की तपती गर्मी में रखे पशुओं का ख्याल

पशुपालक भाइयों मई जून का महीना आ रहा है और हम देख रहे हैं कि धीरे–धीरे वातावरण का तापमान बढ़ता जा रहा है। पशुओं के शरीर पर सीधा प्रभाव वातावरण के तापमान का पड़ता है और अपरोक्ष रूप से अच्छे किस्म के चारे की कमी से भी पड़ता है, जिनकी उपलब्धता गर्मी के दिनों में घट जाती है। गर्मी के दिनों में जब वातावरण का तापमान 45 से 48 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है तो गर्मी का सबसे पहला प्रभाव पशुओं के खाने पर तो पड़ता ही है साथ ही पशु की दूध उत्पादन क्षमता व प्रजनन क्षमता पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। गर्मियों में पशु खाना पीना कम कर देते हैं। संकर नस्ल की गाय अधिक तापमान सहन नहीं कर पाती जबकि देशी गोवंश में अधिक तापमान को सहन करने की क्षमता होती है। गर्मी के मौसम में पीने के पानी के अभाव में पशु गंदा पानी पी जाता है जिससे पशु पेट के कीड़ों की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। गंदा पानी पीने से पशु को आमतौर पर दस्त की शिकायत भी रहती है और इसकी शरीर में पानी की कमी से डीहाइड्रेशन हो जाता है। जून के महीने में अधिक तापमान होने के कारण पशु को लू लगने की संभावना अधिक रहती है इसे सामान्य भाषा में हीट स्ट्रोक भी कहते हैं गाय भैंस जैसे पशु गर्मी में 103 डिग्री फैरन्हाइट तक तो गर्मी सहन कर लेते हैं लेकिन जो ही शरीर का तापमान बढ़ता है, पशु को परेशानी होने लग जाती है। पशु को साँस में तकलीफ होती है, उसकी हृदय गति बढ़ जाती है, मुंह से लार गिरती है, गर्मी प्यास के मारे पशु जमीन पर गिर जाते हैं। जब शरीर का तापमान 106 डिग्री फैरन्हाइट से अधिक पहुंचता है तो पशु की हालत और भी खराब हो जाती हैं और पशुओं की मृत्यु भी हो सकती है।

गर्मी के मौसम में पशुओं को लू से बचाने के लिए पशुपालक कुछ बातों का विशेष ध्यान रखें तो न केवल हम पशुओं को बीमारी से बचा सकते हैं, बल्कि उससे अधिक उत्पादन भी ले सकते हैं इसके लिए जरूरी है कि

- ➢ पशुशाला हरियाली से भरपूर हो उसमें छायादार पेड़ पौधे लगे हो।
- ➢ पशु को हीट स्ट्रोक से बचाने हेतु पशुशाला में बांध कर रखना चाहिए और शरीर में दिन में दो–तीन बार पानी का छिड़काव करना चाहिए।
- ➢ हीट स्ट्रोक से उपचार के लिए पीड़ित पशु को दो तरह से राहत पहुंचा सकते हैं क्योंकि पानी की कमी से शरीर में डीहाइड्रेशन हो जाता है इसलिए भारी मात्रा में उसे लिक्विड देना चाहिए पशुओं को नार्मल सेलाइन या 5 प्रतिशत ग्लूकोज नाड़ी के द्वारा दिया जाना चाहिए।
- ➢ पशुओं के पीने के लिए ठंडे पानी की समुचित व्यवस्था हो ताजा व ठंडा पानी दिन में कम से कम 4 बार पिलाएं।
- ➢ संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व पर्याप्त मात्रा में हो पशुओं को खिलाने चाहिए व हरे चारे का अधिक से अधिक मात्रा में उपयोग होना चाहिए। इस समय दाना व हरा चारा पर्याप्त मात्रा में देना चाहिए।
- ➢ पशु शरीर का तापमान कम करने के के लिए छायादार पेड़ों के नीचे बांधना चाहिए यदि संभव हो तो पशुशाला में पंखे लगाकर भी आराम दिया जा सकता है।
- ➢ पशु शरीर पर दिन में दो–तीन बार ठंडे पानी का छिड़काव करना चाहिए तथा ताजा ठंडा पानी दिन में कम से कम 4 बार पिलाएं।
- ➢ पशुओं को पशुशाला में ही बांधकर रखना चाहिए यदि चरागाह में भेजना है तो सुबह और शाम के समय ही भेजना चाहिए।
- ➢ दिन की अपेक्षा रात्रि में चारा दिखलाएं की रात्रि वातावरण का तापमान कम होता है जिसे पशु के खाने की क्षमता बढ़ती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

बकरियों के प्रमुख संक्रामक बीमारियां एवं टीकाकरण

किसान खेती के साथ–साथ पशुपालन प्राचीनकाल से करता आ रहा है। पशुओं की उपयोगिता इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि कृषि से जुड़े कई प्रमुख कार्यो में पशुओं का उपयोग किया जाता है, इनके गोबर से बनी जैविक खाद् कृषि उपज को बढ़ावा देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब की गाय के नाम से मशहुर बकरी हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्त्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है। बकरी छोटा जानवर होने के कारण इसके रख–रखाव में लागत कम आती है, और सुखा पड़ने के दौरान भी इसके खाने–पीने का प्रबंध सरलता से हो जाता है, तथा जरूरत पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर किसान अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है। कई उन्नत पशुपालक बकरी पालन को मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाकर अच्छा लाभ अर्जित कर रहे है। कई बार बकरियों में विभिन्न प्रकार की संक्रामक बीमारियां भी हो जाती है, जिसका समय पर टीकाकरण व ईलाज नहीं करवाने से पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकशान का सामना करना पड़ सकता है। बकरियों में होने वाले मुख्य संक्रामक रोग निम्नलिखित हैः

बकरी फ्लेग (पी.पी.आर.) : भेड़–बकरियों में पाया जाने वाला एक विषाणु जनित संक्रामक रोग है, यह रोग हमारे देश के लगभग सभी राज्यों में पाये जाने वाला बकरियों का घातक एवं अत्यंत संक्रामक रोग है। बकरियों के झुंड में एक बार इस रोग के होने से लगभग 80–90 प्रतिशत बकरियां इस रोग से ग्रसित हो सकती है। इस रोग की मृत्युदर विशेष कर नवजात मेमनों में काफी अधिक हो सकती है। इस रोग से प्रभावित बकरियों में मुख्य लक्षण तेज बुखार, दस्त, आंख व नाक से पानी आना, खांसी, न्यूमोनियां तथा मुंह में छाले हो जाने के रूप में पाये जाते है।

मुंहपका–खुरपका (एफ.एम.डी.) : यह रोग विभक्त खुर वाले पशुओं का अत्यंन्त घातक एवं संक्रामक विषाणुजनित रोग है यह रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सुअर आदि पालतू पशुओं एवं हिरण आदि जंगली पशुओं में पाया जाता है। मुंहपका–खुरपका रोग से प्रभावित बकरियों में मुख्य लक्षण बुखार, मुंह, जीभ एवं मंसुड़ो पर तथा खुरो के बीच में छाले अथवा घाव के रूप में प्रकट होते है। मुंह में छाले हो जाने की वजह से पशु चारा–पानी पीना कम कर देता है एवं अत्यधिक लार टपकाने लग जाता है। खुरों के बीच घाव होने की वजह से पशु चलते समय लंगड़ाने लग जाते है। नवजात मेमनों में इस रोग का विषाणु सीधे हद्य को प्रभावित करता है तथा ऐसी स्थिति में बिना कोई लक्षण दिखाये मेमनों में अचानक मृत्यु हो जाती है। मेमनों में इस रोग की मृत्युदर 80–100 प्रतिशत तक हो सकती है।

बकरी चेचक : यह रोग बकरियों के सभी आयु अवस्थाओं में पाया जाता है, परन्तु छोटे बच्चे मेमनें इस रोग से ज्यादा प्रभावित होते है। बकरी चेचक रोग हमारे देश में ज्यादातर पश्चिम बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान इत्यादि राज्यों एवं इनके आसपास के क्षेत्रों में पाया जाता है। वर्तमान में बकरी चेचक रोग उपरोक्त राज्यों के अलावा अन्य भागों में भी देखा गया है। विशेषकर ब्लेक बंगाल प्रजाति की बकरियां इस रोग के प्रति काफी संवेदनशील होती है। यह बकरियों में होने वाला एक संक्रामक विषाणुजनित रोग है, तथा इस रोग का हमारे देश में कई जगह स्थानीय भाषा में माता रोग के नाम से भी जाना जाता है। इस रोग से प्रभावित बकरी में शरीर की चमड़ी पर चक्ते/दानें मुख्यतया कान, होट, थूथन व ऐसे सभी स्थानों की चमड़ी जो बाल रहित होती है, पर पाये जाते है। आगे की अवस्था में जाकर इस रोग से प्रभावित बकरियों में न्यूमोनियां भी हो जाता है तथा मृत्यु भी हो सकती है।

आंत्र विषाक्तता (एन्टेरोटोक्सीमिया) : भेड़–बकरियों में होने वाला आंत्र विषाक्तता (आंतो का जहर) क्लोस्ट्रीडियम परफ्रिनजेन्स नामक जीवाणु से होने वाला एक असंक्रामक रोग है, यह रोग इस जीवाणु द्वारा आंतो में उत्पन्न किये गये जहर (टाक्सिन) के आंतो द्वारा अवशोषण से होता है, यह जीवाणु सामान्यतया पशुओं की आंतो में पाया जाता है तथा पशु द्वारा आवश्यकता से अधिक दाना/चारा खा लेने अथवा खाने में अचानक परिवर्तन करने से सम्बन्धित जीवाणु की वृद्विदर अचानक बढ़ जाती है, जिसके फलस्वरूप जीवाणु द्वारा जहर (टाक्सिन) का अत्यधिक उत्पादन हो जाता है और पशु इस रोग से ग्रस्त हो जाता है। बकरियों में इस रोग के मुख्य लक्षणों में अचानक पेट में तेज दर्द, जमीन पर गिरकर घिसटना या चक्कर लगाना, चाल में असमानता, लड़खड़ाना, बैठने की प्रक्रिया में लगातार बदलाव, आफरा अन्त में काले रंग का दस्त होना होते है। विशेषकर अच्छे व स्वस्थ्य पशुओं की इस रोग से प्रभावित होने पर 2–24 घण्टे में मृत्यु हो जाती है।

गलघोंटू : यह रोग पाश्चूरेला माल्टोसिडा नामक जीवाणु के कारण होता है। मौसम परिवर्तन के कारण पशुओं को होने वाले तनाव, थकान व लम्बी दूरी की यात्रा इस रोग के होने की सम्भावना को और बढ़ा देती है। यह रोग अधिकतर वर्षा ऋतु में होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षणों में तेज बुखार (104 डिग्री से 107 फारेनहाइट) आना, नाक से बदबूदार स्त्राव निकलना, गले में सूजन आना, श्वांस लेने में परेशानी के साथ–साथ धुर्र–धुर्र की आवाज आना होता है।

बकरियों में रोगों से बचाव के उपायः

- प्रतिदिन बाड़ों की नियमित रूप से साफ–सफाई करनी चाहिए तथा गंदगी को बाड़ो से काफी दूर बने गड्डों में दबा देना चाहिए।
- बाड़ों के अन्दर व बाहर नियमित रूप से सप्ताह में एक–दो बार बिना बुझे चुन्ने का छिड़काव करें, जिससे कि सूक्ष्मजीवी एवं परजीवियों की संख्या को कम किया जा सके।
- प्रतिमाह बाड़ों के अन्दर फर्श पर सूखा घास–फूस डालकर जला देना चाहिए, इससे बाड़ों के अन्दर व बाहर पूर्ण विसंक्रमण हो जाता है तथा परजीवियों की सभी अवस्था नष्ट हो जाती है।
- प्रति तीन–चार माह के अन्तराल पर बाड़ों में जमीन की मिट्टी कम से कम 6 इंच तक खोदकर निकाल दे, एवं नई साफ मिट्टी भर देने से संक्रमक की सम्भावनाएं कम हो जाती है।
- सप्ताह में कम से कम एक या दो दिन लाल दवाई (उचित मात्रा) युक्त पानी बकरियों को पिलाना चाहिए ताकि बकरियों तथा मेमनों में होने वाली पेट की बीमारी तथा मुंह पर दानों (एक्थाईमा) की समस्याओं से बचा जा सके।
- बीमार बकरियों को स्वस्थ्य पशुओं से अलग रखकर उनका उचित उपचार व देखभाल करनी चाहिए।
- मेमनों को अत्यधिक सर्दी एवं गर्मी से बचाकर रखना चाहिए।
- पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार बकरियों को उचित समय–समय पर आन्तरिक परजीवी नाशक दवाईयां दी जानी चाहिए।
- बकरियों में होने वाले बाह्य परजीवियों का भी समय समय पर उचित परजीवी नाशक दवाई के घोल से सावधानीपूर्वक उपचार करते रहना चाहिए।
- बकरियों को उनकी विभिन्न आयु अवस्थाओं एवं शारीरिक मांग के अनुसार सन्तुलित आहार देना चाहिए।
- खान–पान में एकदम से किसी भी प्रकार के बदलाव से बचना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कोई पशु उसकी क्षमता से ज्यादा ना खायें।
- हमेशा ताजा एवं शुद्ध पानी पीने के लिए उपलब्ध होना चाहिए।
- पशुपालकों को चाहिए कि कोई भी नई बकरी एकदम से झुंड में शामिल नही करना चाहिए। नए पशु को कम से कम 15–20 दिन अलग रखना चाहिए, ताकि कोई नई बीमारी झुंड में नहीं फैले।
- बकरियों में पशुचिकित्सक की सलाह से टीकाकरण करवाना चाहिएः–

बीमारी	प्रारम्भिक टीकाकरण		पुनः टीकाकरण
	प्रथम टीका	बूस्टर टीका	
मुंह–खुरपका रोग (एफ.एम.डी.)	3 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3 माह बाद	6 माह पर
बकरी प्लेग (पी.पी.आर.)	3 महीने की उम्र	आवश्यकता नहीं	3 वर्ष पर
बकरी चेचक	3–4 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 1 माह बाद	12 माह पर
आंत्र विषाक्तता एन्टेरोटोक्सीमिया)	3 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3 सप्ताह बाद	6 माह पर
गलघोंटू	3 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3 सप्ताह बाद	6–12 माह पर

डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मनोहर सैन, डॉ. राजेन्द्र यादव
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मई, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	प्रभावित जिले			
		अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम सम्भावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	झुन्झुनू, जोधपुर	हनुमानगढ़, सीकर	अलवर	बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बूंदी, गंगानगर, जयपुर, झालावाड, नागौर, राजसमन्द, उदयपुर
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	बाड़मेर, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, भीलवाड़ा, जयपुर, पाली, उदयपुर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	हनुमानगढ़, भरतपुर	–	–	–
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	सीकर, जयपुर, चुरू, नागौर	अलवर, हनुमानगढ़, कोटा	–	अजमेर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, भरतपुर, चित्तौड़गढ़, दौसा, डूंगरपुर, झालावाड़, झुन्झुनू, करौली, राजसमंद, सवाईमाधोपुर, टोंक, उदयपुर, पाली, गंगानगर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, गंगानगर, टौंक, कोटा, करौली, जयपुर	–	सीकर	–
पी.पी.आर.	बकरी	जयपुर, उदयपुर सवाईमाधोपुर	–	धौलपुर	अजमेर, अलवर, भीलवाड़ा, कोटा, नागौर, राजसमन्द, दौसा, झालावाड़, झुन्झुनू, करौली, सीकर, भरतपुर, बूंदी
ट्रीपनोसोमियोसिस	ऊँट, गाय, भैंस	सीकर	–	–	–
बबेसियोसिस	गाय, भैंस	सीकर	–	–	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन को बनाया आय का साधन

बालमुकुंद सिंह पुत्र श्री मानसिंह ग्राम पंचायत बगड़ी, तहसील पीपलू, जिला टोंक के निवासी है। बालमुकुंद काफी वर्षो से पशुपालन व कृषि का कार्य कर रहे हैं। इन्होनें पशुपालन का व्यवसाय तीन भैंसों से प्रारम्भ किया था। पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक के वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार पशुपालन को मुख्य व्यवसाय मानकर पशुओं की संख्या में वृद्धि कर इस व्यवसाय को ओर अधिक बढ़ाने का निश्चय किया। वर्तमान में बालमुकुंद के पास 35 भैंस, 17 बछड़ी, 10 गाय तथा 20 बकरी है तथा पशुओं की संख्या ओर अधिक बढ़ाना चाहते है। साथ ही बालमुकुंद भैंस की मुर्रा व गाय की गिर नस्ल का वैज्ञानिक तरीके से पालन कर रहे हैं। यह अपनी जमीन का उपयोग पूर्ण रूप से पशुओं के हरे चारे के रूप में कर रहे हैं। बालमुकुंद औसतन 20 लाख का दूध प्रतिवर्ष बेच देते है। पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग जैविक खाद् के रूप में कर रहे हैं। बालमुकुंद पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा आयोजित पशुपालन प्रशिक्षण शिविरों में समय–समय पर भाग लेकर पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके से करने तथा पशुओं के लिए संतुलित आहार, टीकाकरण, कर्मी हरण, खनिज लवण तथा नमक आदि के उपयोग करने बाबत जानकारी प्राप्त करने एवं पशुओं की विभिन्न बीमारियों एवं उनकी रोकथाम के बारे में विचार–विमर्श करते रहते है। बालमुकुंद पशुपालक के रूप में युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्त्रोत है।

सम्पर्क- बालमुकुंद सिंह, ग्राम पंचायत बगड़ी, तहसील- पीपलू, जिला- टोंक (मो. : 8058924034)

निदेशक की कलम से...

पशुओं में टीकाकरणः संक्रामक रोगो से बचाव का उपाय

प्रिय किसान, पशुपालक भाईयों व बहनो। भारत में लगभग 70 प्रतिशत आबादी कृषि व पशुपालन व्यवसाय पर निर्भर है। हमारे देश में खेती–बाड़ी के साथ–साथ पशुधन पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है, तथा पशुपालन का भारतीय अर्थव्यवस्था में भी बड़ा योगदान हैं। पशुपालन व्यवसाय पशुपालकों के लिए आय का अतिरिक्त स्त्रोत है। राजस्थान जहां पर वर्षा बहुत कम होती है, वहां पशुपालन व्यवसाय पशुपालकों के लिए एक वरदान है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों व बेरोजगारों के लिए पशुपालन ही आजीविका का एक मात्र साधन हैं। इस स्थिति में पशुओं की उचित देखभाल व खान–पान पर विशेष ध्यान देकर इस व्यवसाय को ओर अधिक लाभप्रद बनाया जा सकता है। पशुओं में समय–समय पर विभिन्न बीमारियां भी होती है, जिसके कारण पशुओं की मृत्यु हो जाती है, कुछ बीमारियों में पशुओं की मृत्यु तो नहीं होती परन्तु बीमारी के कारण उत्पादकता में कमी आ जाती है। पशुओं के बीमार होने अथवा मृत्यु होने पर गरीब पशुपालकों को बड़ा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इसलिए पशुओं को बीमारियों से बचाने हेतु टीकाकरण बहुत आवश्यक होता है। एक कहावत भी है कि ''बीमारी से बचाव भला'' पशुओं को संक्रामक रोगो से बचाने हेतु मानसुन से पूर्व अथवा सर्दी शुरू होने से पहले टीकाकरण किया जाता है। जैसे गलघोंटू, लंगड़ा बुखार, फड़किया रोग, भेड़ चेचक, पी.पी.आर.रोग, खुरपका–मूंहपका रोग आदि बीमारियों का टीकाकरण पशुपालन विभाग द्वारा किया जाता है। आने वाले बरसात के मौसम में पशुओं में गलघोंटू, लगड़ा बुखार आदि रोगों के फैलने की सम्भावना रहती है। अतः पशुओं में गलघोंटू, लगंड़ा बुखार, फड़किया रोग के टीके मानसून से पूर्व लगवा लेना चाहिए जिससे पशुओं के बीमार होने से होने वाली आर्थिक हानि से बचा जा सके।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

RAJUVAS
e-पशुपालक चौपाल
।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।
माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एज्यूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एज्यूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया